अभिमन्यु अनत की कविताओं में श्रमजीवी चेतना और मानवीय संघर्ष का स्वरूप

डॉ. सरला देवी

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय महाविद्यालय दूबलधन, झज्जर।

शोध-सारांश

अभिमन्यु अनत **समकालीन हिंदी कविता के ऐसे महत्वपूर्ण कवि हैं जिनकी रचनाएँ श्रमजीवी वर्ग के जीवन, उसकी पीड़ा, संघर्ष, विस्थापन और प्रतिरोध को गहन संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करती हैं।** विमलेश कांति वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' में संकलित **उनकी कविताएँ 'अधगले पंजों पर', 'फिर भी', 'गिरवी पड़ी किरणें', 'अनफूला कैक्टस', 'काले माथे का सफेद सोना', 'लंबी मृत्यु इतिहास की' और 'तृप्ति' श्रमिक जीवन की विडंबनाओं, शोषणकारी सामाजिक संरचनाओं तथा मनुष्य की जिजीविषा को उजागर करती हैं। यह शोध-पत्र अभिमन्यु अन**त **की** उपर्युक्त **कविताओं में निहित श्रमजीवी चेतना और मानवीय संघर्ष के विविध रूपों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का निष्कर्ष यह स्पष्ट करता है कि कवि श्रम को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा, सामाजिक चेतना और परिवर्तन की बुनियाद के रूप में प्रस्तुत करता है।**

मुख्य शब्द : श्रमजीवी चेतना, मानवीय संघर्ष, समकालीन हिंदी कविता, अभिमन्यु अनत, **प्रतिरोध, सामाजिक यथार्थ।**

समकालीन हिंदी कविता सामाजिक यथार्थ की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में औद्योगीकरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विस्तार ने श्रमजीवी वर्ग के जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, कारख़ानों में काम करने वाले मजदूर, खेतिहर मजदूर तथा निम्न वर्ग के लोग सामाजिक और आर्थिक शोषण के शिकार रहे हैं। साहित्य ने सदैव इन वर्गों की पीड़ा और संघर्ष को स्वर दिया है।

अभिमन्यु अनत ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविताओं में श्रमिक जीवन की उपेक्षा, असमानता, पीड़ा और प्रतिरोध को केंद्रीय विषय बनाया है। उनकी कविता न केवल यथार्थ का चित्रण करती है, बल्कि सत्ता, पूंजी और व्यवस्था के विरुद्ध प्रश्न भी उठाती है। कमल किशोर गोयनका के अनुसार – "अभिमन्यु देश-प्रेमी हिन्दू हैं। उसे सत्ता से घृणा है, परन्तु आम आदमी से प्रेम है। आम आदमी के सुख-दुःख के लिए उसे सत्ता से प्रश्न करने का साहस रखता है। इस अर्थ में वह निर्भय है। उसे भय है तो देश के गूँगे इतिहास के लुप्त हो जाने का। वह अपने साहित्य से अज्ञात दरवाज़ों को खोलकर उसमें दबी-ढकी-बंधी बाँसों और कोड़ों की अनुगूँजों और प्रतिध्वनियों को रूप देता है।"1 उन्हीं के अनुसार – "अभिमन्यु अनत मूल रूप में पीड़ा, प्रश्न, विद्रोह, परिवर्तन, मुक्ति और मनुष्यता के कवि हैं।"2 इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह समझना है कि अभिमन्यु अनत की कविताओं में श्रमजीवी चेतना किस प्रकार विकसित होती है और मानवीय संघर्ष के कौन-कौन से रूप सामने आते हैं।

श्रमजीवी चेतना : अवधारणा और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

श्रमजीवी चेतना से तात्पर्य उस सामाजिक और वैचारिक जागरूकता से है, जिसमें श्रमिक वर्ग अपने श्रम के मूल्य, अधिकारों और मानवीय गरिमा के प्रति सचेत होता है। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल और धूमिल जैसे रचनाकारों ने श्रमजीवी जीवन को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। समकालीन कविता में यह चेतना और अधिक तीखी तथा प्रतिरोधात्मक हो गई है।

अभिमन्यु अनत की कविता इसी परंपरा को आगे बढ़ाती है। वे श्रम को महज आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक अस्तित्व और मानवीय पहचान का आधार मानते हैं। उनकी कविताओं में श्रमिक वर्ग एक निष्क्रिय पात्र नहीं, बल्कि संघर्षरत और चेतनशील इकाई के रूप में उपस्थित है। अभिमन्यु अनत की कविताओं में श्रमजीवी चेतना केवल यथार्थ का चित्रण भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की सशक्त आवाज़ भी बनकर उभरती है। उनकी काव्य-दृष्टि श्रमिक वर्ग के जीवन-संघर्ष, पीड़ा, अभाव और शोषण को उजागर करते हुए उसे आत्मसम्मान और अधिकार-बोध की दिशा में प्रेरित करती है। इस प्रकार उनकी रचनाएँ श्रमजीवी वर्ग की सामूहिक चेतना को जाग्रत करने का कार्य करती हैं। वे श्रमिक को दया या करुणा का पात्र नहीं, बल्कि परिवर्तन का वाहक मानते हैं, जो अपने श्रम के बल पर समाज की संरचना को गतिशील बनाए रखता है।
अभिमन्यु अनत की कविताओं में श्रम का सौंदर्य-बोध भी दृष्टिगत होता है, जहाँ श्रम केवल जीविका का साधन न होकर सृजन और मानवीय अस्तित्व का मूलाधार बन जाता है। वे श्रमिकों की जीवन-स्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए सामाजिक असमानता, वर्ग-विभाजन और आर्थिक विषमता पर तीखा प्रहार करते हैं। उनकी काव्य-भाषा सरल, संवेदनात्मक तथा प्रभावपूर्ण है, जो पाठक के मन में श्रम के प्रति सम्मान और संवेदना उत्पन्न करती है।

समकालीन संदर्भ में अभिमन्यु अनत की श्रमजीवी चेतना वैश्वीकरण और पूँजीवादी प्रवृत्तियों के बीच श्रमिक वर्ग की बदलती स्थितियों को भी रेखांकित करती है। इस प्रकार उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की चेतना को सुदृढ़ करने में भी सहायक सिद्ध होती हैं। अतः कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत का काव्य श्रमजीवी जीवन की गरिमा, संघर्षशीलता और मानवीय अस्मिता का सशक्त प्रतिनिधि है।

1. अधगले पंजरों पर :

'अधगले पंजरों पर' कविता श्रमजीवी वर्ग की शारीरिक और मानसिक थकान को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें श्रमजीवी वर्ग की विवशता और संघर्ष का चित्रण किया गया है। अधगले पंजर उस शरीर के संकेत हैं, जो निरंतर श्रम करते-करते टूट चुका है, फिर भी जीवन की गाड़ी खींचने को विवश है –

> "जब इतिहास के ऊपर से
> मिट्टी की परतें धुल जाएँगी
> मारिशस के उन प्रथम
> मज़दूरों के अधगले पंजरों पर के चाबुक
> और बाँसों के निशान
> ऊपर आ जाएँगे।"3

यह कविता श्रमिक की असहाय स्थिति के साथ-साथ उसकी जिजीविषा को भी व्यक्त करती है। श्रमिक जानता है कि उसका श्रम शोषित हो रहा है, फिर भी वह रुक नहीं सकता। इस विवशता में ही मानवीय संघर्ष का सबसे मार्मिक रूप सामने आता है।

2. फिर भी :

'फिर भी' कविता में कवि हार न मानने की चेतना को स्वर देता है। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जीवित रहने और संघर्ष जारी रखने का संकल्प श्रमजीवी वर्ग की सबसे बड़ी शक्ति है। इस कविता में कवि ने अपने देश की स्थिति और उसके लोगों के संघर्ष को दर्शाया है। कवि कहता है कि बड़े लोग छोटे लोगों को

दबाते रहते हैं, यह एक पुरानी परंपरा है जो आज भी जारी है। जीवन में संघर्ष और चुनौतियां आती हैं, लेकिन हमें हार नहीं माननी चाहिए। हमें अपने देश और समाज के लिए संघर्ष करना चाहिए और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। कविता में देशभक्ति और संघर्ष की भावना को उजागर किया गया है –

"समंदर में / बड़ी मछलियाँ
छोटी मछलियों को / खाती रहती हैं
यह परंपरा / इतिहास बनी
फुदक रही / हर डाली पर
समंदर और द्वीप / के कानून में
कोई अंतर नहीं होता।"4
×× ×× ×× ××
"मेरा देश एक द्वीप है
मुझे अपने देश से
प्यार है।"5

3. गिरवी पड़ी किरणें :

'गिरवी पड़ी किरणें' कविता में किरणें भविष्य, उम्मीद और संभावनाओं की प्रतीक हैं। इन किरणों का गिरवी होना उस व्यवस्था की ओर संकेत करता है, जिसमें गरीब का भविष्य भी बाजार और पूंजी के हाथों बंधक बन जाता है। यह कविता निराशा और हताशा की गहरी अनुभूति कराती है। श्रमिक की कठोर मेहनत और पीड़ा का चित्र प्रस्तुत करती पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

"जामुनी ईखों को काटते हुए
जब भुजाएँ थक गईं,
पसीने के साथ जब
खून की बूँदें भी
शरीर के रोमकूपों पर
जमती चली गईं"6

4. अनफूला कैक्टस :

'अनफूला कैक्टस' श्रमजीवी जीवन की कठोरता का सशक्त प्रतीक है। कैक्टस रेगिस्तान में जीवित रहता है, पर उसका न फूलना उस जीवन की ओर संकेत करता है, जहाँ सौंदर्य, आनंद और सुख के अवसर अत्यंत सीमित हैं। यह कविता बताती है कि श्रमिक जीवन केवल जीवित रहने का संघर्ष बनकर रह गया है। मानवीय संवेदनाएँ दब जाती हैं, और जीवन एक निरंतर संघर्ष में बदल जाता है –

"कोड़ों की बौछारों पर झूलते हुए
उनके होंठों पर जो मुस्कान थी
वह मेरी साँसों के होंठों पर जो
मुस्कान थी।"7
×× ×× ××
"और मेरी कोठरी का उजाला
तुम्हारी मुट्ठी में क्यों बंद है?
मेरी मुट्ठी के कैक्टस में
फूल क्यों नहीं आया ?"8

5. काले माथे का सफेद सोना :

'काले माथे का सफेद सोना' अभिमन्यु अनत की एक महत्वपूर्ण कविता है, जिसमें श्रमिक के पसीने को 'सफेद सोना' कहा गया है। यह प्रतीक श्रम की पवित्रता और उसके आर्थिक महत्व को रेखांकित करता है।

श्रमिक का माथा धूप, धूल और कठिन परिश्रम से काला है लेकिन उसी से समाज की संपन्नता जन्म लेती है। यह कविता पूंजीवादी व्यवस्था की विडंबना को उजागर करती है, जहाँ श्रमिक स्वयं अभाव में जीता है, जबकि उसके श्रम से पैदा हुई संपदा पर अन्य वर्गों का अधिकार होता है। यहाँ श्रमिक और वर्ग-संघर्ष की स्पष्ट चेतना दिखाई देती है, जो कविता को सामाजिक आलोचना का माध्यम बनाती है –

"बंधु मेरे
मेरा नाता
कोल्हू से है
कोड़ों के घावों से है
और यहाँ की
सभ्यता जिससे बनी है
उस सफ़ेद सोने से है।
मेरे काले माथे की उपज है जो"9

6. लंबी मृत्यु इतिहास की :

'लंबी मृत्यु इतिहास की' कविता ऐतिहासिक और सामूहिक पीड़ा का चित्रण करती हैं। इस कविता में मृत्यु केवल जैविक घटना नहीं, बल्कि ऐतिहासिक प्रक्रिया बन जाती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे शोषण, हिंसा और उपेक्षा को कवि 'लंबी मृत्यु' के रूप में देखता है। यह कविता श्रमजीवी वर्ग के सामूहिक अनुभवों को इतिहास से जोड़ती है और बताती है कि उनका संघर्ष केवल वर्तमान का नहीं, बल्कि ऐतिहासिक है –

"नंगे बदन थे
माथे पर काली मुहर थी
गोरे मालिकों का
कंधों पर कोल्हू की रस्सी का
अमिट निशान था
हथेलियाँ कोरी थीं
चाट गयी थी उन हस्तरेखाओं को
सरदारों की लोलुप जीभ।
मेरे कंधे पर के सभी बोझ
मेरे अपने ही बोझ होते हैं
ख़ामोशी के ये चित्कार भी
अपने ही होते हैं
मैं वह लंबा इतिहास हूँ।"10

7. तृप्ति :

'तृप्ति' कविता श्रमिक जीवन की उस विडंबना को उजागर करती है, जहाँ पूर्ण सुख की कल्पना भी संभव नहीं। यहाँ तृप्ति क्षणिक है—थकान के बाद मिली थोड़ी राहत या भूख मिटाने भर का साधन। यह कविता बताती है कि श्रमजीवी जीवन में तृप्ति भी संघर्ष की शर्तों से बंधी होती है। इस कविता में कवि ने मज़दूर के श्रम और उसके साथ होने वाले अन्याय को दर्शाया है। मज़दूर अपने मेहनत की बूँदों को खेत में बोता है, जिससे फ़सल तैयार होती है लेकिन जब फ़सल तैयार होती है, तो उसके दानों को कोई और व्यक्ति अपने लाभ के लिए बटोर लेता है। मज़दूर को अपने श्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता, जिससे वह आक्रोश में आ जाता है।

कवि कहता है कि मज़दूर ने सूरज को निगल लिया, जो यह दर्शाता है कि मज़दूर का आक्रोश इतना बढ़ गया है कि वह अपने श्रम का उचित मूल्य न मिलने पर अपने जीवन को भी खतरे में डालने के लिए तैयार है –

"माथे की श्रम बूँदों को
खेत में पहुँचकर मज़दूर ने बो दिया

लहलहाती फ़सल जब तैयार हुई
उन हरे-भरे दानों को किसी और ने
तिजोरी के लिए बटोर लिया
इसीलिए आक्रोश में आकर
मज़दूर सूरज को निगल गया।"11

कविता का संदेश यह है कि मज़दूर के श्रम का उचित मूल्य नहीं दिया जा रहा है, जिससे वह आक्रोश में आ जाता है। कविता में श्रमिकों के अधिकारों की बात की गई है और उनके साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है।

निष्कर्ष

अभिमन्यु अनत की कविताओं में श्रमजीवी चेतना और मानवीय संघर्ष का स्वरूप बहुआयामी है। उनकी कविताएँ करुणा के साथ-साथ प्रतिरोध की चेतना से भरी हुई हैं। कवि शोषणकारी व्यवस्था, वर्गभेद और अमानवीय परिस्थितियों पर प्रश्न उठाता है। उसकी कविता पाठक को केवल संवेदनशील नहीं बनाती, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का बोध भी कराती है। कवि श्रमिक जीवन की पीड़ा, विवशता, संघर्ष और जिजीविषा को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करता है। उनकी कविताएँ समकालीन समाज की विषमताओं पर तीखा प्रहार करती हैं और मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना का आग्रह करती हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत की कविता श्रमजीवी वर्ग की सशक्त आवाज़ बनकर समकालीन हिंदी कविता को सामाजिक चेतना से समृद्ध करती है।

संदर्भ सूची :

1. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, पृष्ठ 170-171
2. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य- यात्रा, पृष्ठ 129
3. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 37
4. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 38-39
5. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 39
6. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 40
7. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 41
8. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 42
9. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 42
10. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 44
11. विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृष्ठ 45